त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू

'मानविकी तथा सामाजिक-शास्त्र संकाय' अन्तर्गत

चार वर्षीय स्नातक

के हिन्दी विषय का

पाठ्यक्रम

२०७६

परिचयात्मक विवरण एवं निर्देशन

यह पाठ्यक्रम त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गत स्नातक, हिन्दी, चार वर्षीय अध्ययन को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है । मानविकी एवं भाषा अध्ययन संकाय अन्तर्गत स्नातक स्तर में एक वैकल्पिक विषय के रूप में हिन्दी का चयन करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रत्येक वर्ष में इसके दो-दो पत्र पढ़ने होंगे । प्रत्येक पत्र १०० अंकों का होगा जिनमें ४० अंक उत्तीर्णांक होंगे । प्रथम पत्र से सप्तम पत्र तक प्रत्येक पत्र के लिए ७० अंकों की लिखित परीक्षा होगी और ३० अंक आन्तरिक मूल्यांकन के स्तर पर उन्हें प्रदान किया जाएगा जिनके मानदण्ड नीचे दिए गए हैं । प्रत्येक पत्र में पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रारूप उस पत्र के अन्तर्गत निर्दिष्ट हैं । तृतीय वर्ष में एक ऐच्छिक विषय का पत्र होगा जिसके अन्तर्गत 'क., ख., ' के रूप में दो विकल्प दिए गए हैं जिनमें किसी एक का चयन करना होगा । इस तरह चार वर्षों में कुल ८०० अंकों की परीक्षा देनी होगी ।

आन्तरिक मूल्यांकन के लिए मानदण्ड

शीर्षक	अंक
१. परियोजना कार्य	२०
२. कक्षाकार्य/गृहकार्य	०५
३. प्रस्तुति (लेखन/वक्तृत्व)	०५

नोटः अष्टम पत्र शोध प्रविधि के लिए आन्तरिक मूल्यांकन के लिए उपरोक्त मानदण्ड को हटाकर ३० नम्बर के लघुशोध कार्य निर्धारित किए गए हैं । यह शोध कार्य नेपाल के हिन्दी साहित्यकारों से सम्बन्धित होगा ।

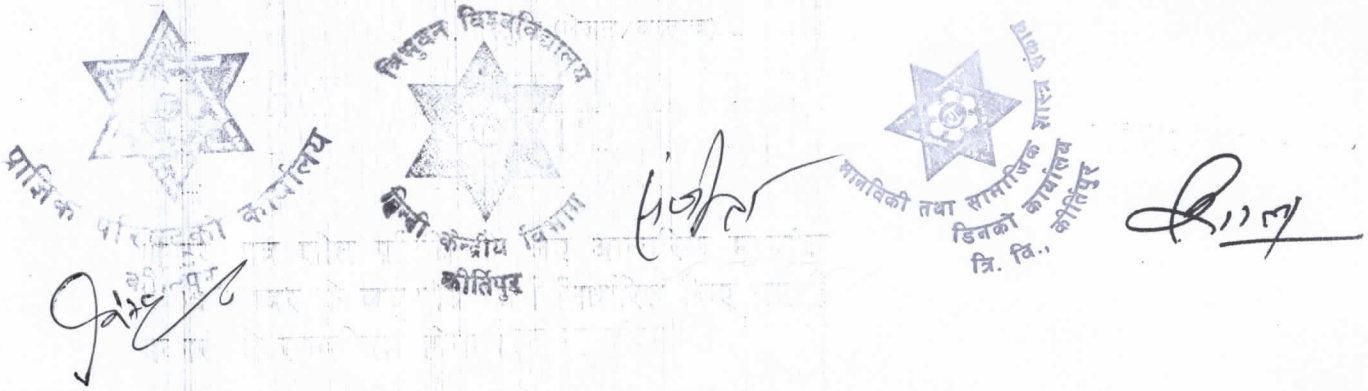

प्रथम वर्ष

पाठ्यकम की सामान्य रूपरेखा

कुल पाठ घंटा =३००

पत्र	संकेतांक	विषय	पाठ घंटा	पूर्णांक १००		उत्तिर्णांक ४०
				बाह्य ७०	आन्तरिक ३०	
प्रथम	हि. ४२१	हिन्दी साहित्य का इतिहास	१५०			
द्वितीय	हि. ४२२	प्राचीन एवं आधुनिक काव्य	१५०			

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
हिन्दी केन्द्रीय विभाग
कीर्तिपुर

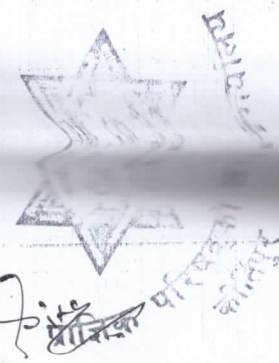

त्रि. वि.

द्वितीय वर्ष

पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा

कुल पाठ घंटा =३००

पत्र	संकेतांक	विषय	पाठ घंटा	पूर्णांक १००		उत्तिर्णांक ४०
				बाहय ७०	आन्तरिक ३०	
तृतीय	हि.४२३	हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाएँ	१५०			
चतुर्थ	हि.४२४	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	१५०			

त्रिभुवन विश्वविद्यालय हिन्दी केन्द्रीय विभाग कीर्तिपुर

प्राज्ञिक परिषद्को कार्यालय कीर्तिपुर

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय डिनको कार्यालय त्रि. वि., कीर्तिपुर

तृतीय वर्ष

पाठ्यकम की सामान्य रूपरेखा

कुल पाठ घंटा =३००

पत्र	संकेतांक	विषय	पाठ घंटा	पूर्णांक १००		उत्तिर्णांक ४०
				बाह्य ७०	आन्तरिक ३०	
पंचम	हि. ४२५	प्रयोजन मूलक हिन्दी एवं अनुवाद	१५०			
षष्टम	हि. ४१०	एच्छिक पत्रकारिता और क्रिएटिव राइटिगं	१५०			
	हि. ४११	एच्छिक समालोचना				

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
हिन्दी केन्द्रीय विभाग
कीर्तिपुर

प्राज्ञिक परिषद्को कार्यालय
कीर्तिपुर

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय
डिनको कार्यालय
त्रि. वि., कीर्तिपुर

चतुर्थ वर्ष

पाठ्यक्रम की सामान्य रूपरेखा

कुल पाठ घंटा =३००

पत्र	संकेतांक	विषय	पाठ घंटा	पूर्णांक १००		उत्तिर्णांक ४०
				बाह्य ७०	आन्तरिक ३०	
सप्तम	हि.४२६	नेपाल का हिन्दी साहित्य और साहित्यकार	१५०			
अष्टम	हि. ४२७	शोध विधि शोध पत्र	१५०			

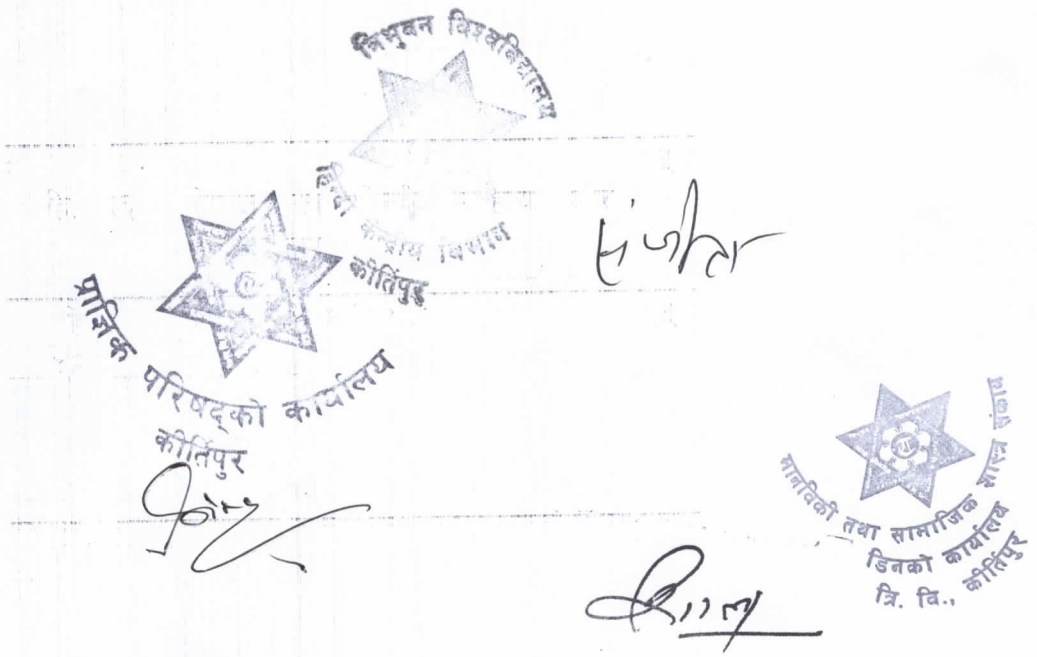

प्रथम पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास

इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के इतिहास संक्षिप्त अनुशीलन है। कहा जाता है कि कवि या साहित्यकार अपने युग का द्रष्टा होता है। इसलिए विकास-यात्रा का अध्ययन किए बिना हम कवि या साहित्यकारों को बारीकी से नहीं समझ सकते। इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य छात्र-छात्राओं के इसी अभाव की पूर्ति है। इस पत्र में ७० अंकों की लिखित परीक्षा होगी जिसमें १० अंकों के पाँच निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने होंगे तथा पाँच-पाँच अंकों की चार टिप्पणियाँ या लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।

विषय

पाठ्य-विषय :
कार्यघंटा

१. आदिकाल : आदिकाल का नामकरण तथा काल-विभाजन, आदिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, वीरगाथाकाल नाम का औचित्य, रासोकाव्य-परम्परा, आदिकालीन सिद्ध और नाथ साहित्य का परिचय। ३०

२. भक्तिकाल : भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, स्वर्णकाल की अवधारणा, भक्तिकाल की चार प्रमुख धाराएँ-उपधाराएँ : ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, रामकाव्य तथा कृष्णकाव्य का परिचय एवं परम्परा। ४५

३. रीतिकाल : रीतिकाल का परिचय, पृष्ठभूमि, नामकरण, काव्य-प्रवृत्ति, रीतिकाल-श्रृंगारकाल, रीतिबद्ध-रीतिसिद्ध-रीतिमुक्त काव्य और उनकी परम्परा। बिहारी, मतिराम, देव, रत्नाकर घनानंद, पद्माकर आदि का संक्षिप्त परिचय। ३०

४. आधुनिककाल : भारतेन्दुयुग, द्विवेदीयुग तथा छायावाद युग में कविता, कहानी नाटक, निबंध तथा उपन्यास का विकास। छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नई कविता, व्यक्तिगत गीति-कविता, छायावादोत्तर युग में कविता। ४५

पाठ्य-ग्रन्थ :

१. आचार्य, रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा।

२. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास।

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय
डिनको कार्यालय
त्रि. वि., कीर्तिपुर

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
नेपाली विभाग
कीर्तिपुर

संदर्भ-ग्रंथ :

१. द्विवेदी, डॉ. हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

२. द्विवेदी, डॉ. हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।

३. वर्मा, धीरेन्द्र, हिन्दी भाषा का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

४. द्विवेदी, डॉ. हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

५. सिंह, डॉ. नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

६. वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य ।

७. डॉ. आशा सिन्हा, हिन्दी साहित्य के कुछ पृष्ठ ।

८. उपेन्द्र कमल, हिन्दी साहित्य चर्चा ।

द्वितीय पत्र

प्राचीन एवं आधुनिक काव्य

इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी सहित्य के प्राचीन तथा आधुनिक कवियों और उनकी रचनाओं से परिचित कराना है । कवियों तथा उनकी रचनाओं के निर्धारित अंशों की समझ के साथ-साथ सम्बद्ध रचनाकारों का आलोचनात्मक अध्ययन भी अपेक्षित हैं । इस पत्र में ७० अंकों की लिखित परीक्षा होगी जिसमें १० अंकों के पाँच निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने होंगे तथा पाँच-पाँच अंकों की चार व्याख्याएँ लिखनी होंगी ।

प्राचीन काव्य

विषय : पाठ घंटा

पाठ्य-विषय :

१. कबीरदास : १०

सबद–तोरी गठरी में लागा चोर, पिया मोर जागे मैं कैसे सोई रे, घूँघट का पट खोल रे, नैहर में दाग लगाय आई चुनरी ।

साखी-गुरु सो ज्ञानुजु लीजिए, गुरु की आज्ञा आवै, गुरु पारस को अन्तरौ, कुमति कीच चेला भरा, गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गुरु गोविन्द दोउ खड़े ।

२. सूरदास : १०

शोभित कर नवनीत लिये, हरि अपनैं आँगन कछु गावत, जेंवत कान्ह नन्द इकठौरे, मैया माहि दाउ बहुत खिजावत, मैया मैं नहिं माखन खायो ।

३. तुलसीदास : ३५

रामाज्ञा (प्रथम सर्ग)

४. मीराबाई : १०

मन रे परसि हरि के चरण, बसौ मेरे नैनन में नन्दलाल,सुनि हौं मैं हरि आवन की आवाज, मैं राम रतन धन पायौ, मेरे तो गिरिधर गोपाल ।

५.रसखान : १०

मानुष हौं तो वही 'रसखानि', या लकुटी अरु कामरिया पर, मोरपखा सिर उपर राखिहौं, कान्ह भए बस

बाँसुरी के ।

आधुनिक काव्य

१.सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला':सरोज-स्मृति १०

२. सुमित्रानन्दन पंत : पल्लव(पल्लव), तेरा कैसा गान(कला और बूढा चाँद), चंचल पग दीप शिखा से धर(युगांत), मैं नहीं चाहता चिर सुख) १०

३. महादेवी वर्मा : दीपशिखा (दीप मेरे जल अकम्पित, पंथ होने दो अपरिचित, जब यह दीप थके तब आना, जो न प्रिय पहचान पाती) १०

४. रामधारी सिंह दिनकर : कुरुक्षेत्र (सम्पूर्ण)
३५

५. हरिवंश राय बच्चन : निशा-निमंत्रण (साथी सांझ लगी अब होने, साथी अन्त दिवस का आया, वायु बहती शीत निष्ठुर, देखो टूट रहा तारा) १०

पाठ्य-ग्रन्थ

कबीर का रहस्यवाद-डॉ. रामकुमार वर्मा

रामाज्ञा (गीताप्रेस)

स्वर्ण मंजूषा, संपादक-नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, मोतीलाल बनारसीदास

सूरसागर-संपादक-धीरेन्द्र वर्मा

सुजान-रसखान-रसखान

अनामिका-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

बूढ़ा चाँद-सुमित्रानन्दन पंत

दीपशिखा-महादेवी वर्मा

कुरुक्षेत्र-रामधारी सिंह 'दिनकर'

निशा-निमंत्रण-हरिवंश राय बच्चन

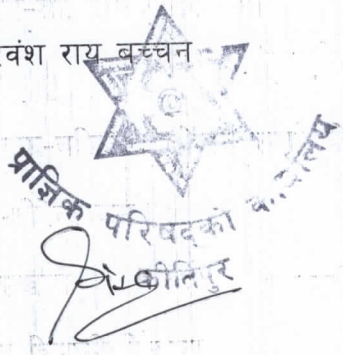

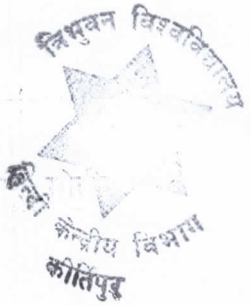

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. द्विवेदी, डॉ. हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

२. द्विवेदी, डॉ. हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।

३. शर्मा, रामविलास, भारतेन्दु युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

४. दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।

५. सिंह, नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

६. नगेन्द्र, हिन्दी वाङ्मय : बीसवीं शताब्दी, बिनोद पुस्तक भंडार, आगरा ।

७. मुक्तिबोध, नयी कविता का सौन्दर्यशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

८. नगेन्द्र, आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्ति, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

९. दीप्ति, श्वेता, आधुनिक हिन्दी कविता की परम्परा : एक अनुशीलन, राइटर च्वाइस, नई दिल्ली और डा. कृष्णचन्द्र मिश्र पब्लिकेशन प्रा.लि. काठमान्डौ ।

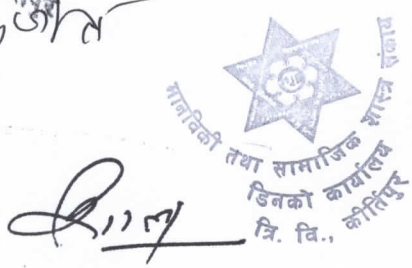

तृतीय पत्र

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र

इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्तों से अवगत कराना है । इसके माध्यम से हिन्दी साहित्य के सैद्धान्तिक जमीन को समझा जा सकता है । इस पत्र में ७० अंकों की लिखित परीक्षा होगी जिसमें १० अंकों के पाँच प्रश्न तथा पांच अंकों की पाँच टिप्पणियाँ अथवा लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य होंगे ।

पाठ्य-विषय :

१. भारतीय काव्यशास्त्र : काव्य-स्वरूप, काव्य-लक्षण, काव्य-प्रयोजन, काव्य-भेद, काव्य-दोष, शब्द-दोष, अर्थ-दोष, रस, रस-निष्पत्ति, साधारणीकरण, नव-रस । ४०

२. शब्दशक्ति-अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, काव्यगुण-ओज, माधुर्य, प्रसाद, काव्य रीति, २५

३. अलंकार-शब्दालंकार/अर्थालंकार (अनुप्रास, श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति,भ्रान्तिमान, मानवीकरण) । ३०

४.मात्राओं की गणना,लघु-गुरु क्रम का ज्ञान, दोहा, सोरठा, चौपाई, कवित्त तथा कुंडलियाँ छन्दों का छन्दशास्त्रीयअध्ययन । २५

५.पाश्चात्य काव्यशास्त्र ३०

१. अरस्तू-अनुकरण सिद्धान्त

२. लौंजाइनस-उदात्त विवेचन

३. वर्ड्सवर्थ-स्वच्छंदतावाद

४. रिचर्ड्स-लय-छन्द सिद्धात

५. क्रोचे-अभिव्यंजनावाद

पाठ्य-पुस्तक :

१. मिश्र, भगीरथ, काव्यशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय ।

२. शर्मा, देवेन्द्रनाथ, पाश्चात्य काव्यशासत्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय
डिनको कार्यालय
त्रि. वि., कीर्तिपुर
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
हिन्दी केन्द्रीय विभाग
कीर्तिपुर
कीर्तिपुर

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. नगेन्द्र, तुलनात्मक साहित्य, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

२. चौधरी, सत्यदेव, भारतीय काव्यशास्त्र ।

३. सिंह, सत्यव्रत (अनूदित) काव्यप्रकाश (हिन्दी अनुवाद), चौखम्भा, वाराणसी ।

५. बाली, तारकनाथ, पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास, शब्दालंकार प्रकाशन, दिल्ली ।

६. उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाराणसी ।

७. दीप्ति श्वेता, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, अभिषेक प्रकाशन नई दिल्ली एवं डा.कृष्णचन्द्र मिश्र पब्लिकेशन प्रा.लि. काठमान्डौ

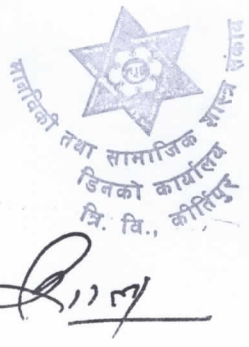

चतुर्थ पत्र

हिन्दी गद्य-साहित्य

इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य-सहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान कराना है । इस पत्र में छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे निर्धारित गद्य-रचनाओं के अध्ययन के साथ-साथ इसकी रचना के आधार के सैद्धान्तिक ज्ञान से अवगत हों । इसके साथ ही इन रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन भी अपेक्षित है । इस पत्र में ७० अंकों की लिखित परीक्षा होगी जिसमें १०-१० अंकों के पाँच निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने होंगे तथा ५-५ अंकों की चार व्याख्याएँ लिखनी होगी ।

पाठ्य-विषय :

१. निबंध : साहित्य क्या है ?-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल १०

२. ललित निबंध : आपने मेरी रचना पढ़ी-हजारी प्रसाद द्विवेदी १०

३. व्यंग्य : मेरे राम का मुकुट भींग रहा है–विद्यानिवास मिश्र, चिंतन चालू है-शरद जोशी । २०

४. कहानी : कफन-प्रेमचन्द, उसने कहा था-चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, टूटना-राजेन्द्र यादव । ३०

५. नाटक : 'लहरों का राजहंस'-मोहन राकेश अथवा 'चन्द्रगुप्त'-जयशंकर प्रसाद । ३५

६.उपन्यास : पिंजर'-अमृताप्रीतम १०

पाठ्य-पुस्तक :

१.उपन्यास : पिंजर'-अमृताप्रीतम ।

२. एक दुनिया समानान्तर, सं. राजेन्द्र यादव ।

३.नाटक : 'लहरों का राजहंस'-मोहन राकेश अथवा 'चन्द्रगुप्त'-जयशंकरप्रसाद ।

४.उपन्यास : पिंजर'-अमृताप्रीतम ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. शर्मा ओंकारनाथ, हिन्दी साहित्य में निबंध का विकास, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर ।

२. अवस्थी, देवीशंकर, साहित्य विधाओं की प्रकृति, मैकमिलन, दिल्ली ।

३. सिंह, नामवर, कहानी-नई कहानी, लोकभारती, इलाहाबाद ।

४. यादव, राजेन्द्र, कहानी : स्वरूप और संवेदना, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली ।

५. ओझा, दशरथ, हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास, राजपाल, दिल्ली ।

६. सिंह, सत्येन्द्र, हिन्दी नाटक, लोकभारती, इलाहाबाद ।

७. शर्मा, मक्खनलाल, हिन्दी रेखाचित्र, शब्द और शब्द, दिल्ली ।

८. शर्मा, जगन्नाथ प्रसाद, हिन्दी गद्य शैली का विकास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

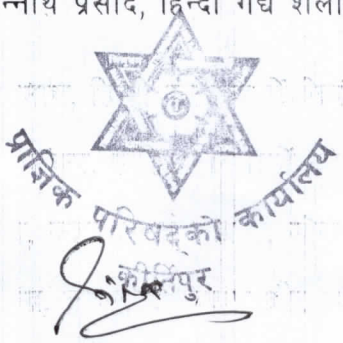

पंचम पत्र

प्रयोजनमूलक हिन्दी एवं अनुवाद

इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी के उन रूपों का व्यावहारिक ज्ञान कराना है जिसका प्रयोग सरकारी कार्यालयों में होता है । इस पत्र में अध्ययन और प्रयोग के लिए निर्धारित शीर्षकों के सिद्धान्त और प्रयोग के अभ्यास की अपेक्षा की जाती है जिससे सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज में सक्षम जनशक्ति का उत्पादन किया जा सके । वैश्वीकरण के वर्त्तमान युग में न केवल विश्व की सभ्यताएँ बल्कि उनके साहित्य भी एक दूसरे के करीब आ रहे हैं और उनके परस्पर सरोकार भी बढ़ रहे हैं । अनुवाद इनके बीच की महत्वपूर्ण कड़ी है । इस पत्र का उद्देश्य छात्रों को अनुवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक ज्ञान से अवगत कराते हुए उन्हें इनकी बारीकियों से परिचत कराना है । इस पत्र में ४० अंक के सैद्धान्तिक और ३० अंकों के व्यावहारिक प्रश्न पूछे जाएँगे ।

पाठ्य-विषय :

१. प्रयोजनमूलक भाषा के स्वरूप एवं प्रकार के विभिन नमूने से परिचय । प्रारूपण : प्रारूप की रचना-विधि, अच्छे प्रारूप के गुण, कार्यालीय आदेश, सरकारी पत्र, गैर सरकारी पत्र, अर्द्ध सरकारी पत्र, व्यक्तिगत पत्र, पंजीयन, परिपत्र, ज्ञापन, आवेदन आदि का अध्ययन एवं अभ्यास
३०

२. अधिसूचना, प्रेस-विज्ञप्ति, घोषणा, प्राप्ति-स्वीकार, पत्राचार के समय प्रयुक्त होने वाले कतिपय मुख्य वाक्यांश । टिप्पण : टिप्पण का अर्थ, परिभाषा, टिप्पण और अन्य रचना रूप, टिप्पण लेखन का उद्देश्य, लेखन के सिद्धान्त, प्रकार एवं अच्छे टिप्पण की कसौटी । २०

३. पारिभाषिक शब्दावली: विषय-प्रवेश, परिभाषा, आवश्यकता, गुण एवं विशेषताएँ । कार्यालीय क्षेत्र में प्रयोग होने वाले कुछ पारिभाषिक शब्दों का अर्थ ज्ञान । संक्षेपण विधि एवं प्रयोग, आवश्यकता मुहावरा,कहावत आदि का प्रयोग, अनुच्छेद-लेखन । २०

४. अनुवाद के स्वरूप एवं सिद्धान्त, अनुवाद की परिभाषा । अनुवाद के प्रकार : शब्दानुवाद, , अर्थानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद । २०

५. अनुवाद की समस्याएँ एवं समाधान, अनुवादक के गुण । १५

६. अनुवाद की परम्परा (प्राचीन एवं आधुनिक) अनुवाद की प्रकृति एवं आवश्यकता । १५

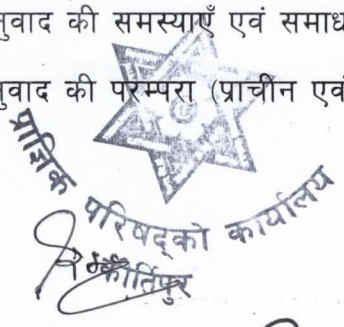

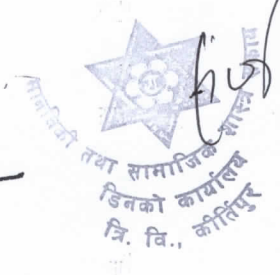

पाठ्य-पुस्तक :

१. प्रसाद, वासुदेवनन्दन, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, भारती भवन, पटना ।

२. चतुर्वेदी, शिवनारायण, प्रालेखन प्रारूप, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।

३. रस्तोगी, आलोक कुमार, हिन्दी में व्यावहारिक अनुवाद, जविन-ज्योति प्रकाशन, दिल्ली ।

४. अय्यर, विश्वनाथ, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

संदर्भ-ग्रन्थ :

१. भाटिया, कैलाशचन्द्र, भाषा-भूगोल, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ ।

२. श्रीवास्तव, रवीनद्रनाथ, भाषा शिक्षण, मैकमिलन, नई दिल्ली ।

३. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, प्रयोजनमूलक हिन्दी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।

४. तिवारी, भोलानाथ, हिन्दी भाषा शिक्षण, लिपि प्रकाशन, दिल्ली ।

५. तिवारी, भोलानाथ, महेन्द्र चतुर्वेदी, पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ ।

६. तिवारी, भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

७. रस्तोगी, आलोक कुमार, हिन्दी में व्यावहारिक अनुवाद, जविन-ज्योति प्रकाशन, दिल्ली ।

८. अय्यर, विश्विनाथ एन. ई., व्याावहारिक अनुवाद, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ।

९. जी. गोपीनाथन, अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग ,

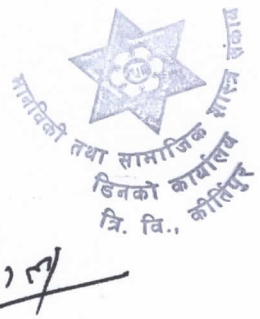

षष्ठम् पत्र (ऐच्छिक)

इस पत्र के अन्तर्गत तीन विकल्प दिए गए हैं जिनमें से छात्र किसी एक का चयन कर सकते हैं ।

क. पत्रकारिता और क्रिएटिव राइटिगं

इस पत्र के अध्ययन और अध्यापन का उद्देश्य छात्रों के पत्रकारिता के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों का आधारभूत ज्ञान प्राप्त कराते हुए एक ऐसी जनशक्ति का उत्पादन है जो इस क्षेत्र में प्रशिक्षित व्यक्ति की तरह अपना योगदान दे सके । इस पत्र में ४० अंक के सैद्धान्तिक और ३० अंकों के व्यावहारिक प्रश्न पूछे जाएँगे ।

पाठ्य-विषय :

१. भारत में नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता का उदय, प्रारंभिक स्थितियाँ, प्रारंभिक पत्रिकाओं का सामान्य परिचय (उदंड मार्तण्ड, बंगदूत, प्रजामित्र, साम्यदंड मार्तण्ड), हिन्दी का प्रथम दैनिक समाचार-पत्र-'सुधा-वर्षण ।'

२. पत्रकारिता की महत्ता, स्वरूप-विवेचन, विविध रूप, समाचार पत्र, समाचार जगत, समाचार संकलन, समाचार प्रस्तुतिकरण, पृष्ठ-सज्जा ।

३. पत्रकार, संपादक (संपादक, उपसंपादक, अतिथि संपादक) के कार्य एवं कर्त्तव्य, संवाददाता (विशेष संवाददाता, खेल संवाददाता, मुफ्फसिल संवाददाता, कार्यालय संवादाता, विदेश संवाददाता, खेल संवादाता ।

४. समाचार पत्र के विभिन्न लेखकीय रूपों, यथा-समाचार, फीचर, संपादकीय, आलेख आदि का ज्ञान एवं अभ्यास ।

५. प्रूफ रीडिंग तथा इसके चिह्न ।

६. विज्ञापन, जनसंपर्क, अभिव्यक्ति-संत्रास, खोजी पत्रकारिता ।

७. रेडियो, टेलीविजन, फोटो तथा फिल्म पत्रकारिता ।

पाठ्य-पुस्तक :

१. तिवारी, अर्जुन, आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

२.सिंह, डा.धीरेन्द्रनाथ, हिन्दी पत्रकारिता

३.सिंह, बच्चन, हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप ।

४. गुप्ता सुरेन्द्र प्रसाद, व्यवहारिक हिनदी पत्रकारिता, जनक अपसेट प्रिन्टर्स, लहान

प्राज्ञिक परिषद्को कार्यालय कीर्तिपुर
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय डिनको कार्यालय त्रि. वि., कीर्तिपुर
त्रिभुवन विश्वविद्यालय हिन्दी केन्द्रीय विभाग कीर्तिपुर

संदर्भ-ग्रन्थ :

१.शर्मा, डा. अशोक कुमार, संचार कांति और हिन्दी पत्रकारिता

२.तिवारी, डा.अर्जुन, सम्पूर्ण पत्रकारिता

३.सिंह बच्चन, हिन्दी पत्रकारिता के नए प्रतिमान

४.त्रिखा डा. नन्दकिशोर, प्रेस विधि

५.जोगलेकर काशीनाथ गोविन्द समाचार और संवाददाता

६.माधव डा. नीरजा, रेडियो का कलापक्ष

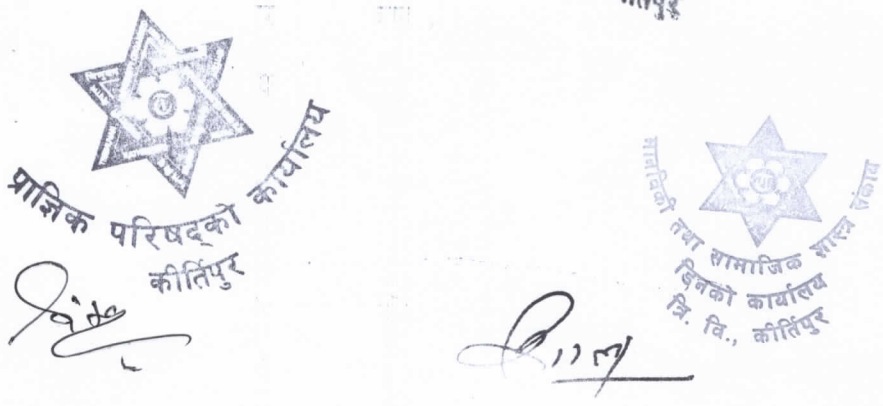

ख. समालोचना

समालोचना साहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं को समझने की दृष्टि प्रदान करती है। इस दृष्टि से इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य छात्रों हिन्दी समीक्षा से अवगत कराना तथा उनकी समीक्षावृत्ति को प्रखर करना है। इस पत्र के अन्तर्गत ७० अंकों की लिखित परीक्षा होगी जिनमें १०-१० अंकों के पाँच दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे और ५-५ अंकों की चार लघुउत्तरीय प्रश्न अथवा टिप्पणियाँ पूछी जाएँगी।

१. हिन्दी आलोचना : उद्देश्य और विकास, आलोचना का स्वरूप, महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, शुक्लयुग और शुक्लोत्तर युग में हिन्दी आलोचना। ४०

२.छायावादी आलोचना दृष्टि। २५
३. प्रगतिवादी आलोचना। २५
४. स्वचछंदतावादी आलोचना। २५
५. कुछ आधुनिक आलोचक : रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. रामविलास शर्मा। ४०

पाठ्य-पुस्तक :

१.खंडेलवाल रामेश्वरलाल, गुप्त सुरेशचन्द्र, हिन्दी आलोचना के आधार स्तम्भ, लोकभारती प्रकाशन

२.चतुर्वेदी डा.रामस्वरूप, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना का अर्थ : अर्थ की आलोचना, लोकभारती प्रकाशन

संदर्भ-ग्रन्थ :

१.तिवारी, रामचन्द्र, हिन्दी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार

२.मधुरेश, हिन्दी आलोचना का विकास, लोकभारती प्रकाशन

सप्तम पत्र

नेपाल में हिन्दी

इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य नेपाल में हिन्दी की परम्परा के साथ-साथ इसके अतीत और वर्तमान से छात्रों को अवगत कराना तथा नेपाल में हिन्दी लेखन में योगदान देने वाले साहित्यकारों तथा उनके साहित्य से उन्हें परिचित कराना है । इस पत्र में १०-१० अंकों के चार दीर्घउत्तरीय प्रश्न, ५-५ अंकों के दो लघुउत्तरीय या टिप्पणीपरक प्रश्न तथा ५-५ अंकों के दो व्याख्यात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे ।

पाठ्य-विषय :

१.नेपाल में हिन्दी की अवस्था, इतिहास

२.नेपाल के हिन्दी लेखकों/कवियों का साहित्यिक परिचय एवं योगदान

३.नेपाल की हिन्दी काव्य विधा चयनित कविताएँ

१.डा. कृष्णजंग राणा(कल्पना के नीर, गाओं खुशी के गीत) "बिखरे काँटे बिखरे फूल" काव्य संग्रह

२.श्री बसन्त चौधरी(गली में सन्नाटा है, मेरा बोधि वृक्ष) "चाहतों के साए में" काव्य संग्रह

३.राजेश्वर नेपाली, (जनकपुर दर्शन, जीवनदायिनी दूधमती) "स्वाभिमान" काव्यसंग्रह

४.डा.श्वेता दीप्ति,(दस्तक, चाँद और चाँदनी) अनुभूतियों के बिखरे पल काव्य संग्रह

५.बिमल कृष्ण नेपाली- वसियत नामा/द्रौपदी की केश राशि

६. चन्द्रशेखर उपाध्याय- मटिहानी महिमा खण्ड काव्य-१-५ दोहा

७. चेतन कार्की तू नहीं है

८.सीताराम प्रकाश अग्रहरि- वो आग मैं ही हूँ/काँये के बीच से

९. जे.एन जिज्ञासु- तुम्हारी याद/ चाँद आया (तेरी यादों में)

१०. महावीर मयंक- वक्त/विश्व शान्ति (वक्त से)

४. नेपाल का हिन्दी उपन्यास

१. कबूतर वा नेपाल की वो बेटी

५.नेपाल की हिन्दी कहानियाँ

१. धुस्वाँ सायमि- एक फूल पर्वत का: जीवन मृत्यु का

२. दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ-सोनिया

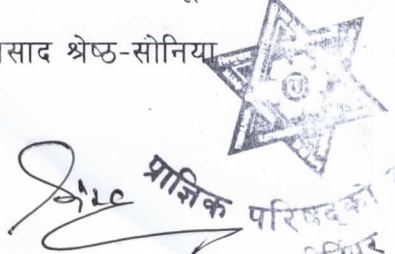

३.किशोर नेपाल- पगलाया हुआ

४.प्रा.डा. उषा शर्मा ठाकुर- टूटते-जूड़ते रिश्ते

५.डा.रामदयाल राकेश-प्राइवेट ट्यूटर

६.बुन्नीलाल सिंह- नीमगाछ की कोइली

७. बी.पी कोइराला-होड़

८.गोपाल अश्क- काला गुलाब

६.नेपाल के हिन्दी निबन्ध

१. कृष्णचन्द्र सिंह प्रधान-मैं ऐसा सोचता हूँ

२.दीनानाथ शर्मा–जीवन की परिभाषा

३.डा. संजीता वर्मा कलाकृति और सौन्दर्य

पाठ्य-पुस्तक :

१.मिश्र, कृष्णचन्द्र, नेपाल में हिन्दी, प्रकाशन विद्याविहार, दिल्ली

२.ठाकुर उषा ठाकुर, हिन्दी और नेपाली के प्रतिनिधि हस्ताक्षर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

३.गोप, सूर्यनाथ, नेपाल में हिन्दी और हिन्दी साहित्य, किताब महल इलाहाबाद

४.राकेश,डा रामदयाल, नेपाल के हिन्दी लेखक, प्राच्य प्रकाशन, वाराणशी

५.राणा, डा. कृष्णजंग, बिखरे काँटे बिखरे फूल

६.चौधरी बसंत, चाहतों के साए में, टाइम्स ग्रुप बुक्स

७.नेपाली राजेश्वर, स्वाभिमान

८.दीप्ति डा. श्वेता,, अनुभूतियों के बिखरे पल

९. हिन्दी केन्द्रीय विभाग द्वारा प्रकाशित पाठ्यक्रम पुस्तक

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
हिन्दी केन्द्रीय विभाग
कीर्तिपुर

शैक्षिक परिषदको कार्यालय
कीर्तिपुर

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय
डिनको कार्यालय

अष्टम-पत्र

शोध-प्रविधि

इस पत्र के अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य छात्रों को शोध के तकनीकी पहलुओं से अवगत कराने के अलावा शोध-पत्र लेखन का अभ्यास है । इस पत्र में ७० अंकों की लिखित परीक्षा होगी जिसमें १०-१० अंकों के पाँच दीर्घउत्तरीय तथा ५-५ अंकों के चार लघुउत्तरीय अथवा टिप्पणीपरक प्रश्न पूछे जाएँगे ।

पाठ्य-विषय :

१. अनुसंधान और उसका स्वरूप (परिभाषा और व्याकरण), मानव-जीवन में शोध का स्थान मानव जीवन में शोध का स्थान, अनुसंधान का उपयोग । १५

२. शोध-चिंतन, प्रवेश, चिंतन के प्रकार (सकिय-निष्किय) । १५

३. शोध-संस्कार (शोध-संस्कार क्या है ?), अनुसंधानक के अपेक्षित गुण, सत्यान्वेषण की मनोवृत्ति, चिंतन और तर्कविधि । १५

४. अनुसंधान के सोपान, समस्या चयन, निर्धारण, क्षेत्र तथा सीमाओं का निर्धारण, सामग्री संकलन, विश्लेषण एवं पंजीकरण, प्रस्तुति । १५

५. अनुसंधान की पद्धति–निगमन एवं आगमन, दोनों में अन्तर, वैज्ञानिक तर्क पद्धति, विश्लेषण पद्धति १५

तुलनात्मक अध्ययन ।

६. लघु शोध-प्रबंध लेखन के लिए आवश्यक पुस्तकेः–उपन्यास–धुस्वा सायमि–रेतकी दरार, जलजला, डा.शिवशंकर यादव–कबूतर, डा.संजीता वर्मा–उपन्यास–सिसकियाँ, कहानी संग्रह– गुरुदक्षिणा, कविता संग्रह– मैं और मेरी कविताएँ, गोपाल अश्क –गीत गंध शब्दों की गूँज,प्रकाशक सम्पादक संजीता वर्मा, अश्क, डा.श्वेता दीप्ति –अनुभूतियों के विखरे पल, कृष्णजंग राणा–उडान अन्य नेपाल की हिन्दी पुस्तकें

पाठ्य-पुस्तक :

१. डॉ. गणेशन, अनुसंधान प्रविधि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

२. सिंह, विजयपाल, हिन्दी अनुसंधान, लोकभारती, इलाहाबाद ।

३. सिंह, कन्हैया, हिन्दी पाठानुसंधान, लोकभारती, इलाहाबाद ।

संदर्भ-ग्रन्थ :

१.सत्यदेव, सामाजिक विज्ञानों की शोध पद्धतियाँ, चण्डीगढ हिन्दी ग्रंथ अकादमी

२.सिन्हा सावित्री, अनुसंधान का स्वरूप, आत्माराम प्रकाशन, दिल्ली

३.सिंह उदयभानु, अनुसंधान का विवेचन, पटना हिन्दी साहित्य संसार

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
हिन्दी केन्द्रीय विभाग
कीर्तिपुर

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय
डिनको कार्यालय
त्रि. वि., कीर्तिपुर

प्राज्ञिक परिषद्को कार्यालय
कीर्तिपुर